Date :

HISTORY (H)
B.A. – III PART – B.
PAPER – Vth.
HISTORY OF India (1550 – 1750)
UNITY – II PolitH

Mugal administrative system.

Mansab and jagir.

⇒ मनसबधारी की आय कितनी :–

अकबर के शासन काल और उसके बाद भी दरबार के मनसबदारियों का वेतन से भी कोई शिकायत नहीं थी क्योंकि वह उसकी उम्मीद से हमेशा अधिक व नकद रूप में होता था। कभी-कभी उसका वेतन के रूप में जागीर से वसूला गया कर भी दे दिया जाता था। मनसब-दार अपने वेतन से ही अपने

Scanned with CamScanner

अधीन रखे घोड़ों व खर्चे से निकालते थे। उन्हें आयकर देने से छूट थी। अमीर - ए - उम्दा जो प्रथम श्रेणी के मनसबदार होते थे उन्हें 30,000 रुपये, अमीर जो द्वितीय श्रेणी के थे उन्हें 29,000 रुपये और मनसब दारी जो तीसरे वर्ग में आते थे उन्हें 28,000 रुपये के साथ प्रत्येक सवार के लिए 2 रुपये प्रतिमाह के साथ उसके हिसाब से वेतन मिलता था। मनसब दारअपने वेतन लेने स्वयं सम्राट के दरबार में जाते थे। उनकी मृत्यु के बाद उसके द्वारा संचित संपत्ति को राजकोष में जमा कर दिया जाता था।

⇒ मनसबदारी क्या करते थे :-

मुगल सम्राट अपने मनसबदारियों को कभी - कभी सैनिक अभियान में भेजने के अलावा

Scanned with CamScanner

Date :

इनका प्रयोग आंतरिक विद्रोह को रोकने और नए प्रदेशों को जीतने के लिए भी करते थे। इसके अलावा कभी-कभी गैरप्रशासनिक कार्य भी दिये जाते थे।

⇒ मनसबदारी का नियंत्रण :

अकबर ने मनसबदारों को घोड़ों के आधार पर ही वर्गीकृत किया था। इसलिए यह विशेष रूप से घोड़ों की देखभाल को सुनिश्चित करने के लिए स्वयं उनका निरीक्षण करता था या किसी सीमित को भी इस काम के लिए नियुक्त कर देता था।

इसके साथ ही घोड़ों और सवारों की पहचान करना निश्चित करने के लिए घोड़ों को दागने की प्रथा को शुरू किया गया। इसके साथ घोड़सवार का हुलिया जिसे खाता

Scanned with CamScanner

SELCO

Date :

रखना कहा जाता था भी काम किया जाता था।

हर मनसबदार को अपने घुड़सवार की संख्या के आधार पर एक घुड़सवार के दो अरबी और इराकी घोड़े रखने का भी आदेश था।

⇒ मनसबदारी के दोष :-

मनसबदार क्योंकि वेतन बहुत अधिक पाते थे और उनकी मृत्यु के बाद संपत्ति राजकोष में जमा करनी होती थी, इसलिए वे अपने जीवन काल में विलासिता का जीवन व्यतीत करते थे। इसके अतिरिक्त सैन्य शक्ति में भी वे कभी-कभी राज की नियंत्रण को धोखा देने में सफल हो जाते थे।

⇒ मनसबदारी प्रथा में बदलाव :-

Scanned with CamScanner

Date :

अकबर ने अपने मनसबदारों पर पूरा नियंत्रण रखा था। बाद के बादशाहों ने यह नियंत्रण बढ़ा दिया जिसके फलस्वरूप उनकी सैन्य शक्ति का निरीक्षण करने के साथ ही उनकी सेना का 1/3 तथा 1/4 भाग बादशाह के ~~सम्मुख~~ सम्मुख मंगवाया जाता था। उन्हें जो मनसबदार जितने अच्छे सैनिक दिखा सकता था। उसके अनुसार उसके प्रत्येक सैनिक दो रुपये का इनाम भी दिया जाता था।

मनसबदारी प्रथा की यह विशेषता थी कि न तो वह आनुवांशिक थी और न ही उसे हस्तांतरित किया जा सकता था। यदि पिता की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मनसबदार नियुक्त होता था। तब से वह नया मनसबदार माना जाता था। इनसे न

SELCO

Date :

न तो कोई मनसबदार शोषण कर सकता था और न ही वह अपने अधिकारों का दुरुपयोग कर सकता था। इतना होने के बाद भी सबसे ऊँची श्रेणी के मनसब पद शाही खानदान के लिए ही अलिखित नियम के अंतर्गत सुनिश्चित थी।

To be continue ...

DR. UDAY KUMAR.

DR. L. K. V. D. college Tajpur.

Scanned with CamScanner